राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अंग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-8831-9

पहला संस्करण : 2019 (शक 1941)

Jungle Se... *(Hindi Original)*

₹ 60.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

जंगल से...

सुनीति रावत

चित्र

इरशाद कप्तान

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

एक घने जंगल में एक जोड़ा बाघ और बाघिन रहते थे। खूब हरियाली और बहुत-से पशु-पक्षी वन में दौड़ते-उड़ते दिखाई देते थे। बाघ और बाघिन के भोजन के लिए हिरन, साँभर, तीतर, बटेर, बंदर आदि कई जीव-जंतु मिल जाते थे। बाघिन जब बच्चे देने को तैयार हुई तो दोनों ने एक गुफा में अपना घर बना लिया। गुफा काफी गहरी और लंबी थी। बाघ ने अपने पंजों से खोद-खोदकर गुफा में नरम मिट्टी बिछा दी। बाघिन ने टहनियों और घास-पात का बिछौना सजा दिया। गुफा के द्वार पर दो बड़े-बड़े पत्थर लगे हुए थे। ऊपर एक नुकीली चट्टान थी। अब बाघ चट्टान के ऊपर बैठकर इधर-उधर ताकता पहरा देने लगा। बाघिन ने गुफा में तीन बच्चों को जन्म दिया। तीन नन्हे बघीरे, पीली-काली धारीदार। बच्चों ने माँ का दूध पी-पीकर कुछ दिन बाद आँखें खोल दीं। अब तो बस गुफा में तीनों ऊधम मचाने लगे। दिनभर धमा-चौकड़ी करते। माँ का दूध पीते वे बच्चे जब काफी बड़े हो गए तो माँ उन्हें गुफा के बाहर निकालने लगी। बाहर का खुला हिस्सा देखकर बच्चे मजे से उछलने-कूदने लगे।

बच्चे काफी बड़े होने पर माँ भी बाघ के साथ-साथ शिकार की टोह में निकलने लगी। अब बच्चों को दूध छुड़ाकर ताजा शिकार करके वह उन्हें मांसभोजी बनाना चाहती थी। पहली बार एक नन्हा हिरन मारकर जब माँ ने बच्चों के आगे छोड़ दिया तो बच्चे उससे खेलने लगे, कभी वे जीभ से उसे चाटते, कभी गुर्राते और कभी गर्दन या पूँछ पकड़कर खींचते। उनमें से एक नन्हा बघीरा देर तक हिरन से खेलता रहा। फिर उसने हिरन का कान पकड़ लिया। उसे दाँतों के बीच दबाया तो कान कट गया और खून का पहला स्वाद नन्हे बघीरे ने चख लिया। उसके बाद तो पेट से हिरन को फाड़ना जो नन्हे बघीरे ने शुरू किया, तो उसकी दोनों बहनें भी साथ लग गईं। नरम-नरम गोश्त खाकर पेट भर गया तो तीनों फिर धमा-चौकड़ी मचाने लगे। नन्हा बघीरा अब पत्तों के ढेर की बिलकुल परवाह न करता और अकसर माँ के जाने के बाद गुफा से बाहर निकल आता। वह इधर-उधर दूर-दूर तक निकल जाता, जबकि

उसकी बहनें द्वार से ही चीं-चाँ करतीं, उसे वापस लौटने को कहती रहतीं। एक दिन माँ के जाते ही नन्हा बघीरा गुफा से बाहर निकला और उछलता-कूदता बड़ी दूर निकल गया। बहुत देर तक वह एक गिलहरी के पीछे दौड़ता रहा। गिलहरी इधर-उधर दौड़कर थक गई तो एक पेड़ पर जा चढ़ी। नन्हा बघीरा उसे नीचे से ताकता रहा। अचानक पत्तों में सरसराहट हुई और टहनियों के चटकने की आवाज आने लगी। बघीरे ने देखा, एक बड़ा-सा शेर सामने से आ रहा था। बघीरा घबराकर तेजी से ढलान की तरफ दौड़ा। ढलान तीखी थी, वह पत्तों में फिसलता हुआ बहुत नीचे पानी के झरने में जा गिरा। वह चट्टानों के सहारे फिर से ऊपर चढ़ना चाहता था, पर काई लगी चट्टानों पर उसके नन्हे नाखूनों वाले पंजे टिक नहीं पाते और वह बार-बार फिसल जाता। बेचारा भूखा-प्यासा चट्टान के एक कोने पर बेदम हाँफने लगा। साँझ घिरने लगी। बघीरा अब बहुत निराश हो गया; फिर भी वह बराबर हँक-हँक करता माँ को पुकारता रहा। माँ जब गुफा के अंदर लौटी तो बघीरे को न देखकर बहुत घबराई। वह जल्दी से बाहर निकली और हँक-हँक करती बघीरे को पुकारती दौड़ने लगी। वह अपने बच्चे की गंध लेने के लिए बार-बार रुकती और उसे पुकारती। हाँफती, दौड़ती बाघिन जब ढलान के ऊपर पहुँची तो उसने पुकारा—हँक-हँक। बघीरा माँ की आवाज पहचान कर जोर से बोला—हँक-हँक। माँ ने नीचे देखा पानी की बहती धारा के अतिरिक्त उसे कुछ न दिखा। वह फिर चिल्लाई—हँक-हँक। बघीरा चट्टान के पीछे बैठा था, किसी तरह उठा और बोला—हँक-हँक। माँ ने अब उसे देख लिया। वह लंबी-लंबी छलाँग लगाती, पानी के धाराओं के पार होती बघीरे से पास जा पहुँची। उसने पलभर ठंड से ठिठुरते भीगे हुए बघीरे को ताका और झट दाँतों के बीच उसे उठा लिया। फिर लंबी छलाँग लगाते हुए गुफा की ओर दौड़ पड़ी। गुफा में दोनों बहनें मजे से हिरन का ताजा मांस खा रही थीं। बघीरा निढाल-सा माँ के शरीर से सट गया। माँ ने उसके शरीर को चाट-चाटकर पानी साफ किया। माँ से गर्माकर बघीरा कुछ स्वस्थ हुआ। वह बोला, "माँ, मैं अब अकेला कहीं नहीं जाऊँगा, सबके साथ ही रहूँगा, ठीक है।" माँ उसे प्यार से सहलाने लगी।

हरियल वन में बहुत-से पशु-पक्षी रहते हैं। उसी जंगल के एक पेड़ पर एक बुलबुल और एक कौवे का घोंसला भी था। दोनों के दो-दो छोटे बच्चे थे, जिनकी आँखें अभी-अभी खुली थीं। उसी पेड़ के तने के एक खोखल में एक गिलहरी भी रहती थी। उसका एक नन्हा बच्चा था। कुछ ही दिनों के बाद बुलबुल के बच्चों के पंख निकल आए। बुलबुल उन्हें उड़ना सिखाने लगी। उन्हीं दिनों कौवों के बच्चों के पंख भी बड़े हो गए और वे भी उड़ना सीखने लगे। एक दिन बुलबुल के दोनों बच्चे टीनू और नीनू जमीन पर उतरे। टीनू ने उड़ान भरी और दूर तक उड़ता चला गया। नीनू माँ के आस-पास ही रहा। माँ ने आवाज दी—"टीनू, दूर तक अकेले मत जाओ। आओ, लौट आओ।"

"नहीं माँ! अब मेरे पंख मजबूत हो गए हैं, मुझे मत रोको", टीनू ने उड़ते-उड़ते कहा। बुलबुल बोली, "कुछ दिन तक अभी हमारे साथ ही रहो, अभी से दूर उड़कर चले गए तो संकट में पड़ जाओगे।" "देख लूँगा!" टीनू माँ की बात अनसुनी करके दूर निकल गया। उड़ते-उड़ते हुए वह थक गया तो फूलों के बाग में उतर गया। काफी देर से एक बाज उसका पीछा कर रहा था। वह फूलों के बीच थके-बैठे टीनू पर झपटा। बाग में मोर थे। उन्होंने बाज को झपटते देखा तो वे बाज पर झपटे। बाज डरकर भाग गया। टीनू घबराकर फूलों के पीछे छिप गया। इतने में बुलबुल उसे खोजते हुए आ पहुँची। वह टीनू...टीनू चिल्लाई।

"बाज तो नहीं है माँ, बाहर निकल आऊँ?" "हाँ! चलो, वापस चलो।"

"माँ! मोरों ने मुझे बचा लिया, वरना बाज मुझे खा जाता।"

"धन्यवाद दो मोरों को," माँ ने और टीनू ने मोरों को धन्यवाद दिया और उड़ चले। उड़ते-उड़ते टीनू ने कहा, "माँ! अब मैं अकेला नहीं निकलूँगा।"

"ठीक है कम-से-कम तब तक जब तक कि तुम्हारे पंख दूर तक उड़ने लायक न हो जाएँ।" 'हाँ'। उधर पेड़ की शाखा से कौवे के बच्चे भी नीचे उतर गए। गिलहरी के बच्चे ने उन्हें देखा तो खोखल से निकलकर उनके साथ खेलने चल पड़ा। सुंदर काली धारी वाली गिलहरी को देखकर कौवे के बच्चे बहुत खुश हुए, उन्हें देखकर नोनू गिलहरी ने कहा, "मुझसे दोस्ती करोगे?"

"दोस्ती और तुमसे, क्या तुम हमारी तरह उड़ सकते हो?"

"नहीं! उड़ तो नहीं सकता हूँ, पर दौड़ तो सकता हूँ।"

"अरे जाओ! तुम्हारी दौड़ और हमारी उड़ान में क्या मुकाबला, हटो!" कालू कौवे ने कहा।

"जा-जा काले-कलूटे, ऊपर से फटी आवाज," गिलहरे ने भी गुस्से से कहा।

"अच्छा जी! तो तुम बड़े अच्छे हो धारी वाले जैसे किसी ने उँगलियों से काली स्याही की धारियाँ खींच दी हों।" "चुप"...गिलहरा बोला।

"चुप".. बड़के कौवे ने कहा।

"अरे-अरे लड़ो नहीं, चलो दौड़ लगाते हैं। देखते हैं कौन जीतता है," छुटके कौवे ने कहा।

"चलो"..बड़का दौड़ने के लिए तैयार हो गया। अब चलो। गिलहरा दौड़ा, कौवा भी दौड़ा, कौवा पिछड़ गया, दौड़ना उसके वश की बात न थी।

पेड़ पर बैठे बुलबुल के बच्चे ये तमाशा देख रहे थे। माँ कौवी और माँ बुलबुल भी नीचे झाँकती हँस रही थीं। गिलहरी भी खोखल में से मुँह निकाले हँसने लगी। बच्चों ने माँओं को हँसते देखा तो समझ गए कि वे उनकी नादानियों पर हँस रही हैं।

"चलो! अब हम लोग कभी एक-दूसरे से होड़ नहीं लगाएँगे, अपनी-अपनी चाल चलेंगे," गिलहरे ने कहा।

"हाँ! हम तो आपस में बस खेलेंगे-कूदेंगे और बड़ों का कहना मानेंगे," टीनू ने कहा।

"ठीक है! किसी के रंग-रूप पर भी कोई ताना नहीं मारेंगे," कौवी के बच्चे बोले।

"लगता है, हमारे ये नादान बच्चे अब सयाने होने लगे हैं," माँओं ने कहा।

चारों ओर बर्फ गिरती गई, यहाँ तक कि बर्फ के पिघलने से बनी पानी की धाराएँ भी ढँक गईं। सफेद भालुओं के लिए यह बर्फीला मौसम बहुत कठिन हो गया। अब उन्हें बर्फ पिघलने का इंतजार करना होगा, और किसी-न-किसी चट्टान के नीचे बनी किसी गुफा में छिपकर रहना होगा। माँ भालू ने देखा कि आस-पास के सभी भालू यहाँ-वहाँ जाकर छुप गए हैं। बाहर तेज बर्फीली आँधी है और उसके दो बच्चे हैं। माँ ने बच्चों से कहा, "बड़कू और छुटकू जल्दी-जल्दी मेरे साथ आगे बढ़ो। मुझे एक गुफा याद है, उधर जिसके ऊपर कुछ तिरछी चट्टानें हैं। ऐसा न हो कि कोई और वहाँ पहुँचकर अपने लिए ठिकाना बना ले। अब तो यह बर्फीला मौसम पूरे छह महीने रहेगा।"

"तो क्या हम इतने दिन गुफा में ही छुपे रहेंगे, माँ?"

"हूँ! बाहर आकर करोगे भी क्या? सिवाय बर्फीली आँधियों के भटकने के इस मौसम में न तो कोई पौधा ही खाने को मिलेगा और न ही कोई सील, न पक्षी, न कोई मछली ही।"

"क्यों? क्या मछलियाँ और सील भी अपने घर में जाकर छुप जाएँगी माँ," बड़कू ने पूछा।

"छुप क्या जाएँगी, पानी की ऊपरी सतह में ही बर्फ की परतें जम जाएँगी, पता भी नहीं चलेगा कि जल कहाँ और थल कहाँ। सील और मछलियाँ तो तैरना जानती हैं न, तैरकर दूर-दूर निकल जाएँगी या उनके ढेरों बच्चे और वे जल में जमीन और चट्टानों के आस-पास ही रह लेंगी।"

"और पौधे और घास माँ!" छुटकू ने पूछा।

"छुटकू यह ध्रुव प्रदेश है, यहाँ वैसे भी कहीं पेड़-पौधे दिखाई नहीं देते हैं। कुछ उगते भी हैं तो चट्टानी सतह पर। वह भी गर्मी के मौसम में। वे भी बर्फ गिरने से टूट जाते हैं।"

"तो हम इतने दिन क्या खाएँगे माँ?"

"कुछ नहीं, तुम तो मेरा दूध पी लेना जब तक दूध बनेगा वरना ये चर्बी की मोटी-मोटी परतें जो मछलियाँ और सील मछली खा-खाकर तुम्हारे शरीर में जमी हैं, यही तुम्हारा जीवन बचाएँगी।" "मैंने तो कितनी सारी सीलें खाई हैं माँ।"

"तभी तो तू इतना मोटा गद्देदार है।"

"मैंने भी खाई हैं।"

"तू भी कम नहीं है, उस पर तुम्हारा यह सफेद मोटे फर का कोट तुम्हें ठंड से बचाएगा।"

"और तुम माँ! तुम तो सबसे ताकतवर, सबसे ज्यादा तंदुरुस्त हो।"

"हाँ बड़कू, हमारी चर्बी अब सर्दियों में हमारे काम आएगी और बदन की गर्मी से तुम दोनों की भी रक्षा होगी। बस तुम मुझसे लिपटे पड़े रहना। ये लो, बातों-बातों में हमारी गुफा भी आ गई।"

"हूँ।"

"जरा ठहरो, मैं गुफा के द्वार पर पड़ी बर्फ पंजों से खुरच लेती हूँ। ऐसा न हो कि कोई नर भालू वहाँ छिपा हो, वह तो तुम्हें भी मार सकता है।" माँ भालू ने हवा में थूथन उठाकर, गंध का जायजा लिया, फिर गुफा के द्वार से बर्फ हटाकर अंदर झाँका।

"चलो कोई नहीं है," वह बच्चों को लेकर अंदर चली गई। फिर वह लेट गई और दोनों बच्चों को बदन से सटा लिया। "अब तुम सुरक्षित हो। बाहर गिरती बर्फ से गुफा का दरवाजा अपने आप बंद हो जाएगा। अब हमें सो जाना चाहिए।"

"हूँ!" माँ से सटे बच्चे झटपट सो गए और माँ ने भी नींद से बोझिल आँखें बंद कर लीं।

दिन बीतते गए, बर्फ गिरनी बंद हो गई। फिर सूरज ध्रुव प्रदेश की ओर बढ़ने लगा और सूरज की रोशनी से बर्फ पिघलने लगी। एक दिन माँ भालू ने महसूस किया कि पानी की एक धारा गुफा में बहकर आ रही है। "अहा! गर्मी का मौसम आ गया। उठो-उठो!" उसने बड़कू और छुटकू को हिलाया। वे भी जाग गए। माँ ने देखा, दोनों बच्चों के शरीर काफी दुबले हो गए हैं। उसने गुफा के द्वार पर आकर पंजों से बर्फ हटानी शुरू की। जल्दी ही बर्फ की परतों में एक गोल छेद हो गया। अब तो माँ भालू उस छेद से उछलकर बाहर निकल गई। बच्चों ने भी कूदकर बाहर निकलना ही बेहतर समझा।

अब वे तीनों फिर बर्फीले मैदान में थे। चारों ओर ऊँची बर्फ की चट्टानों से पानी टपक रहा था। माँ ने जल्दी-जल्दी नर्म पड़ गई बर्फ की परतों को खोजना शुरू किया। साथ ही, वह पंजों से बर्फ कुरेद-कुरेदकर गंध सूँघने लगी। "गंध! सील की गंध!" माँ भालू ने कहा और उछलकर बर्फ की तहों को तोड़ने लगी। अब नीचे से पानी झाँकने लगा। साथ ही दिखाई दी सील। माँ भालू पेट के बल लेट गई और फिर उसने अपनी लंबी थूथन पानी में डाल दी। थोड़ी ही देर में माँ ने अपना मुँह बाहर निकाला। उसके मुँह में एक छोटी-सी सील थी। खूब मांस से भरी थैली जैसी थी। बच्चों के लिए माँ ने वह सील बर्फ के ऊपर फेंक दी। उसे देखकर दोनों बच्चों की लार टपक गई। वे उछले और सील को खाने लगे।

माँ भालू ने देखा, दोनों बच्चे सील खाने में व्यस्त थे। "अब ठीक है," कहकर माँ पानी के गड्ढे में कूद गई। अहा! कितनी सीलें तैर रही हैं! माँ भालू भी अच्छी तैराक थी।

वह तैरते हुए सीलों का पीछा करने लगी और जल्दी ही एक बड़ी सील मुँह में दबाकर उसी गड्ढे से बाहर निकल आई। बच्चे तो बड़ी सील देखकर आधी खाई सील को छोड़कर माँ के पास दौड़े आए और तीनों मिलकर बड़ी सील को खाने लगे। आधी सील खाकर माँ ने उसे पास ही गड्ढा खोदकर उसमें दबा दिया। "कल खाएँगे हैं न"?

"हूँ!"

"चलो, अब थोड़ी-सी धूप का आनंद ले लें। आओ लेट जाओ!" माँ लेट गई और बच्चे बर्फ की सतह पर लोट-पोट होने लगे।

झबरा नेवला झाड़ियों में छिपा अपने शिकार की टोह ले रहा था। उसे आस-पास ही धीमी-सी सरसराहट सुनाई दे रही थी। वह जान गया था कि कोई साँप आस-पास ही कहीं रेंग रहा है। वह उसके खुले मैदान में आने का इंतजार करने लगा।

उधर साँप भी सरसराता हुआ झाड़ियों के बीच से बाहर निकलना चाहता था। वह भी चौकन्ना था, क्योंकि कल उसने झाड़ियों के पास एक नेवले को देखा था। नेवले और साँप की आपस में बहुत दुश्मनी होती है। साँप इसलिए सावधानी से चल रहा था। नेवला साँप की धीमी-सी सरसराहट सुन तो रहा था, पर उसे देख नहीं पाया था।

साँप झाड़ियों से निकलकर चूहे की खोज में खुले मैदान के उस पार अनाज के खेत में जाना चाहता था। वह झाड़ियों से बाहर निकला और तेजी से मैदान पार करने लगा। नेवले की नजर उस पर पड़ गई। बस फिर क्या था, घात लगाए बैठा नेवला साँप पर झपट पड़ा। साँप भी नेवले पर फन से वार करने लगा। नेवला बार-बार हवा में उछलता साँप की गर्दन को पकड़ने की कोशिश करने लगा। गर्दन पकड़कर वह साँप के फन को कुचलना चाहता था ताकि साँप उस पर दाँत न गड़ा दे। आखिर में नेवले ने साँप की गर्दन दबोच ली और उसे तब तक दबाए रखा, जब तक साँप मर न गया। साँप के मरते ही नेवले ने उसका सिर काट डाला, उसे फेंककर वह साँप को मुँह में दबाए झाड़ियों की ओर बढ़ा। नेवला बहुत भूखा था, साँप को झाड़ियों के अंदर तक घसीट ले जाने का धीरज उसमें न था। वह साँप के कोमल मांस को खाने लगा, उसे पता भी न चला कि उसका एक दुश्मन सामने एक ऊँचे पेड़ की फुनगी पर बैठा उसे देख रहा है।

पेड़ की फुनगी पर बैठा बाज नेवले को देखकर उड़ा और तेजी से नेवले पर झपटा। नेवला दावत उड़ा रहा था, जरा-सा भी सावधान न था। बाज की छाया जब उस पर पड़ी, वह भागने को तैयार हुआ। पर इससे पहले कि वह भागकर झाड़ियों में जा छिपता, बाज ने उसे दबोच लिया।

अब बाज उसे पंजों में दबाकर फिर पेड़ की फुनगी पर जा बैठा, उसका वहाँ कोई दुश्मन न था।

घने जंगल में किंगफिशर का एक जोड़ा रहता था। पास ही एक नदी बहती थी, जिसकी घास में बहुत-सी नन्ही मछलियाँ खेलती थीं। किंगफिशर का जोड़ा अकसर उड़कर हवा में लहराता हुआ पानी में गोता लगाकर नन्ही मछलियों को पकड़ता और पेट भर जाने पर एक पेड़ की शाखाओं के बीच बैठा रहता। एक बार मादा किंगफिशर जब अंडे देने को तैयार हुई तो नर किंगफिशर ने दूर-दूर तक उड़कर अपना घोंसला बनाने के लिए एक सुरक्षित स्थान ढूँढ़ लिया। वह एक बड़ा-सा पेड़ था, जिसकी एक शाखा पिछले तूफान में टूट गई थी और दूसरी हरी-भरी थी। टूट गई मोटी शाखा के ऊपर गहरा-सा एक गड्ढा बन गया था। किंगफिशर के जोड़े ने उसी गड्ढे में तिनके बिछाकर अपना घोंसला बना लिया।

घोंसला बन जाने पर मादा ने तीन अंडे दिए। वह जब अंडों को सेती तो नर हरी डाल पर बैठा रहता। कुछ ही दिनों में अंडों से बच्चे निकलने वाले थे कि एक बड़े मॉनीटर (छिपकली) की नजर किंगफिशर के घोंसले पर पड़ गई। अब तो वह अंडों या बच्चों की ताक में रहने लगा कि कब दोनों घोंसले से दूर जाएँ और वह स्वादिष्ट अंडों को फोड़कर खा जाए। एक दिन जब दोनों ही घोंसला छोड़कर मछली की तलाश में नदी की ओर निकले तो मॉनीटर की बन आई। वह जल्दी से पेड़ पर चढ़ा और खोखले के अंदर अपना मुँह डालने लगा। अंडे गहरे कोटर में थे। मॉनीटर ने अपनी लपलपाती जीभ को हवा में लहराया। वह कोटर में जीभ कटोरे-सी गोल बनाकर डालना ही चाहता था कि नर किंगफिशर उड़ता-उड़ता घोंसले के पास आ पहुँचा ...खतरा....चिरट...टिर्र उसने मादा को आवाज दी और मॉनीटर पर अपनी पैनी चोंच से हमला कर दिया। ढीठ मॉनीटर ने अपनी थूथन बाहर नहीं निकाली तो नर जल्दी-जल्दी उसे अपनी पैनी चोंचें

मारने लगा। इतने में मादा भी वहाँ आ पहुँची। उसने तो ताबड़तोड़ मॉनीटर के सिर पर पंजे मार दिए। मॉनीटर ने लहूलुहान होकर थूथन बाहर निकाली। ऊपर देखना ही चाहता था कि मादा ने कठोर चोंच से उसकी आँख पर आक्रमण कर दिया। हँफ-हँफ करता मॉनीटर पीछे खिसकना चाहता था, पर कहाँ खिसकता तने से फिसलकर जोर से जमीन पर गिर पड़ा, नीचे बड़े-बड़े पत्थरों से टकराकर वह पेट पर भी चोट खा बैठा। फिर किसी तरह झाड़ियों की ओर जान बचाकर भागा और एक झाड़ी के पीछे दुबककर कराहने लगा। किंगफिशर के जोड़े ने उतरकर उड़ते-उड़ते झाड़ी के कई चक्कर लगाए, पर घायल मॉनीटर थूथन जमीन से सटाए चुपचाप कराहता रहा। "अब भूल से भी हमारे घोंसले की तरफ नहीं आएगा," नर ने कहा।

"हाँ, पर हममें से एक जब भोजन की तलाश में उड़े तो दूसरे को घोंसले के पास ही रहना चाहिए," मादा ने कहा। "ठीक है, चलो अंडों को तो देख लें," नर बोला।

"हूँ!" मादा कोटर में उतरी और अंडों को सुरक्षित देखकर उन्हें सेने लगी। नर उड़कर नदी में मछली पकड़ने चला गया। अब उसे मादा के लिए भी मछलियाँ पकड़नी होंगी। जल्दी-जल्दी गोते मारते हुए किंगफिशर ने सोचा।

नंदन वन में बहुत-से जानवर रहा करते थे। सब बड़े आनंद से रहते थे। एक दिन माँ से बिछड़े दो बाघ के बच्चे कहीं से उस वन में आ पहुँचे। वे अभी इतने बड़े नहीं थे कि मारकर किसी बड़े शिकार को खा सकें। पर जमीन में चलते हुए छोटे-छोटे शिकार वे करने लगे थे। कभी घात लगाकर दाना चुगते किसी तीतर या बटेर को भी दबोच लेते थे। कभी नन्हे खरगोश भी पकड़ लेते और कभी कुछ न मिलने पर भूखे ही रह जाते। दोनों बच्चे एक बरगद के पेड़ के नीचे डेरा डाले रहते। अकसर वे एक-दूसरे से लिपटकर सोए रहते या आपस में खेलते रहते।

उसी पेड़ पर एक बंदर भी रहता था। वह बहुत चालाक था। वह अकसर पेड़ की लंबी शाखाओं से लटककर बहुत नीचे तक आ जाता और सोए हुए बच्चों पर अपने लंबे हाथ से जोर का तमाचा मार देता या किसी का कान पकड़कर खींच देता। बच्चे तिलमिला उठते और गुर्राते हुए बंदर को डराते। बंदर डरने वाला नहीं था। वह झट से एक पेड़ की डाल से कूदता और दूसरी डाल पकड़कर झूल जाता। बच्चे फिर आपस में खेलने लगते तो वह उतरकर निचली फुनगी में आ जाता। एक हाथ से डाल पकड़कर नीचे झूलता और दूसरे से उन बच्चों के कान पकड़कर खींचता, कभी पूँछ पकड़कर खींच देता। बाघ के बच्चे उछलकर उसे पकड़ना चाहते तो वह झट से दूसरी डाल पर छलाँग लगा देता। बेचारे बच्चे खिसियाकर रह जाते।

एक दिन साँझ ढले जब दोनों बघीरे एक-दूसरे से सटे सो रहे थे, बंदर मजे से नीचे उतरा और दोनों पर थप-थप दोनों हाथों से थप्पड़ मारने लगा। बाघ के बच्चे भला ऐसी बेहूदगी कैसे सहते! दोनों जागकर एक साथ बंदर पर झपटे। बंदर की टाँग एक ने दबोच ली तो दूसरे ने उसकी पीठ पर दाँत गड़ा लिए। बंदर को तो लेने के देने पड़ गए। पर वह हार मानने वाला नहीं था। उसने टाँग खींचने वाले बघीरे को जोर का एक चाँटा मारा। वह चें-चें करता

टाँग छोड़कर भागा तो बंदर ने जोर की एक उछाल मारी और पीठ पर चढ़े बघीरे को जोर से जमीन पर पटक दिया। फिर कुलाँचे भरता वह पेड़ की ऊँची फुनगी पर जा बैठा। बघीरे की पीठ पत्थर से टकरा गई थी। वह बड़ी मुश्किल से उठकर एक ओर भागा, दूसरा पहले ही आगे निकल चुका था। दोनों भागते गए, भागते गए जब तक कि उस जंगल से दूर दूसरे जंगल में नहीं पहुँच गए।

वहाँ उनको अपनी बिछड़ी माँ मिल गई, जो पिछले तीन दिनों से इधर-उधर उन्हें ढूँढ़ रही थी। अब वे सुरक्षित थे, उधर पेड़ की फुनगी में बैठा बंदर चोट की परवाह किए बिना मुस्करा रहा था, शायद इसलिए कि कल बड़े होने वाले बाघों से उसने अपने जंगल को बचा लिया था।

धौली बिल्ली के पाँच बच्चे हुए। तीन सफेद बिल्लियाँ और दो काले बिल्ले। धौली ने उन्हें जंगल में एक छोटी गुफा में छिपाकर रखा। वह उनके लिए शिकार मारकर लाती और उनके बड़े होने का इंतजार करती। कुछ दिनों के बाद पाँचों बच्चों की आँखें खुल गईं। अब वे माँ के साथ इधर-उधर फुदकने लगे। माँ ने उन्हें दौड़ना सिखाया, दबे पाँव चलना सिखाया और शिकार मारकर लाना सिखाया। पाँचों अब काफी बड़े हो गए। तीनों सफेद बिल्लियाँ बड़ी तेज और फुर्तीली हो गईं। दोनों काले बिल्ले खूब हट्टे-कट्टे और मजबूत हो गए।

धौली अब निश्चिंत रहने लगी बच्चे शिकार खुद कर लेंगे, उसने सोचा। वह दूर-दूर तक जाकर घूमने लगी। बच्चे भी दूर-दूर तक जाने लगे। एक बार पाँचों बच्चे घर से बहुत दूर निकल गए। कालू बिल्ले ने पुकारा, "चलो, घर लौट चलें।" चार बच्चे तो झट दौड़कर बड़े भैया कालू के पास आ गए, पर पाँचवीं सफेदा का कहीं पता न था। चारों घर लौट आए। माँ ने पूछा, "सफेदा कहाँ है?"

"पता नहीं, कहीं दूर निकल गई"।

“मूर्ख है”, कहकर माँ ने बच्चों को डाँटा। “साथ-साथ रहने को कहा था न! उसे छोड़ आए, बुरी बात।” कालू के तो माँ ने कान ही ऐंठ दिए, इतने में सफेदा लौट आई। वह भरपेट चूहे खाकर आई थी। माँ ने कहा? “तुम्हें सबसे अलग नहीं जाना चाहिए था। कुछ हो जाता तो?”

“हूँ! अब हम बच्चे नहीं रहे, हमारी चिंता छोड़ दो,” सफेदा ने अकड़कर कहा।

“ठीक है! चलो तुम्हें एक गुर और सिखा दूँ, पेड़ पर चढ़ने का गुर।” माँ उन्हें बाहर ले जाकर पेड़ पर चढ़ना सिखाने लगी, सफेदा कुछ देर साथ रही, फिर दूर झाड़ियों के पीछे सो गई। उसने भरपेट भोजन जो किया था। बच्चे लौट आए। माँ ने सफेदा को भी जगाना चाहा, पर वह नहीं हिली। माँ गुस्सा होकर जंगल की ओर चली गई। थोड़ी देर बाद सफेदा को किसी के गुर्राने की आवाज सुनाई दी। उसकी नींद टूट गई। उसने देखा, पास ही एक शेर का बच्चा खड़ा गुर्रा रहा था। वह भी गुर्राने लगी। दोनों की गुर्राहट बढ़ने लगी। बच्चों ने उनकी गुर्राहट सुनी। वे झाड़ियों की ओर भागे। कालू ने दोनों को देखा और बोला, “सफेदा इधर छलाँग लगाओ” और झटपट वे चारों पेड़ पर चढ़ गए। सफेदा ने छलाँग लगाई, पर शेरनी का बच्चा भी कुछ कम न था। उसने झपट्टा मारकर सफेदा को जख्मी कर दिया।

सफेदा चिल्लाई, बचाओ। कालू ने अपने बहन-भाइयों को देखा तो बोला, "एक साथ झपटो" और वे एक साथ शेर के बच्चे पर झपट पड़े। सफेदा छूट गई। कालू बोला, "जाओ पेड़ पर चढ़ जाओ।" कैसे? वह रोने लगी। अच्छा वहीं रुको कहकर कालू अपने भाई-बहनों के साथ फिर झपटा। चारों मिल गए तो शेरनी का बच्चा टिक न सका। वह उनके तेज पंजों से लहूलुहान हो गया। वह सरपट अपनी गुफा की ओर भागा। वे चारों बच्चे भी घर की ओर दौड़े। इतने में शेरनी की दहाड़ सुनाई दी। वे चारों पेड़ की ऊँची डाल पर चढ़ गए। सफेदा नीचे खड़ी रोने लगी। धौली ने शेरनी की दहाड़ सुनी तो वह बच्चों की तरफ दौड़ी। उसने पेड़ के नीचे खड़ी सफेदा को मुँह में दबोचा और घर की तरफ दौड़ी। अपनी गुफा में पहुँचकर सफेदा बोली, "माँ! आज सबने एका न दिखाया होता तो मैं तो मर गई होती।"

"इसलिए तो कहती हूँ कि सब साथ रहा करो।"

"माँ! तुम वक्त पर न आई होती तो?"

"तो तुम्हें शेरनी मार चुकी होती। इसीलिए तो मैंने कहा था, पेड़ पर चढ़ने का गुर सीख लो, अब तो सीखोगी न?"

"हाँ, माँ!" अब तक और बच्चे भी अपने घर लौट आए थे। धौली ने सबको एक बार देखा, बोली एकता का गुर सीखा था न, इसलिए आज सफेदा को बचा पाए।"

"हम उसे कल ही आखिरी गुर भी सिखा देंगे माँ!"

"हाँ बच्चों, गुरु जब किसी गुर (विद्या) को सिखाना चाहे तो सीख लेनी चाहिए।" माँ ने समझाया।

कोआला गो-गो ने अभी-अभी माँ के साथ पेड़ों पर चढ़ना सीखा था। वह जंगलों की काँटेदार झाड़ियों से पत्तियाँ चुनता अथवा पेड़ पर चढ़ी बेलों से फल तोड़ता। अधिकतर वह यूकेलिप्टस के पेड़ों की पत्तियाँ चबाता रहता था। यूकेलिप्टस की पत्तियाँ कोआला बहुत पसंद करते हैं। माँ कभी-कभी टहनियाँ तोड़कर नन्हे गो-गो के लिए जमीन में ही फेंक देती। तब वह पालथी मारकर बैठ जाता और अगले दो पैरों से हाथ का काम लेता। वह तेजी से पत्तियों को मुँह में डालता और चबाता रहता। उसका चेहरा काले रंग का और बदन सफेद रंग का था। पूँछ फिर काले बालों की थी। उसकी आँखों के नीचे सफेद दायरे दिखाई देते थे। वह बहुत ही प्यारा बच्चा था।
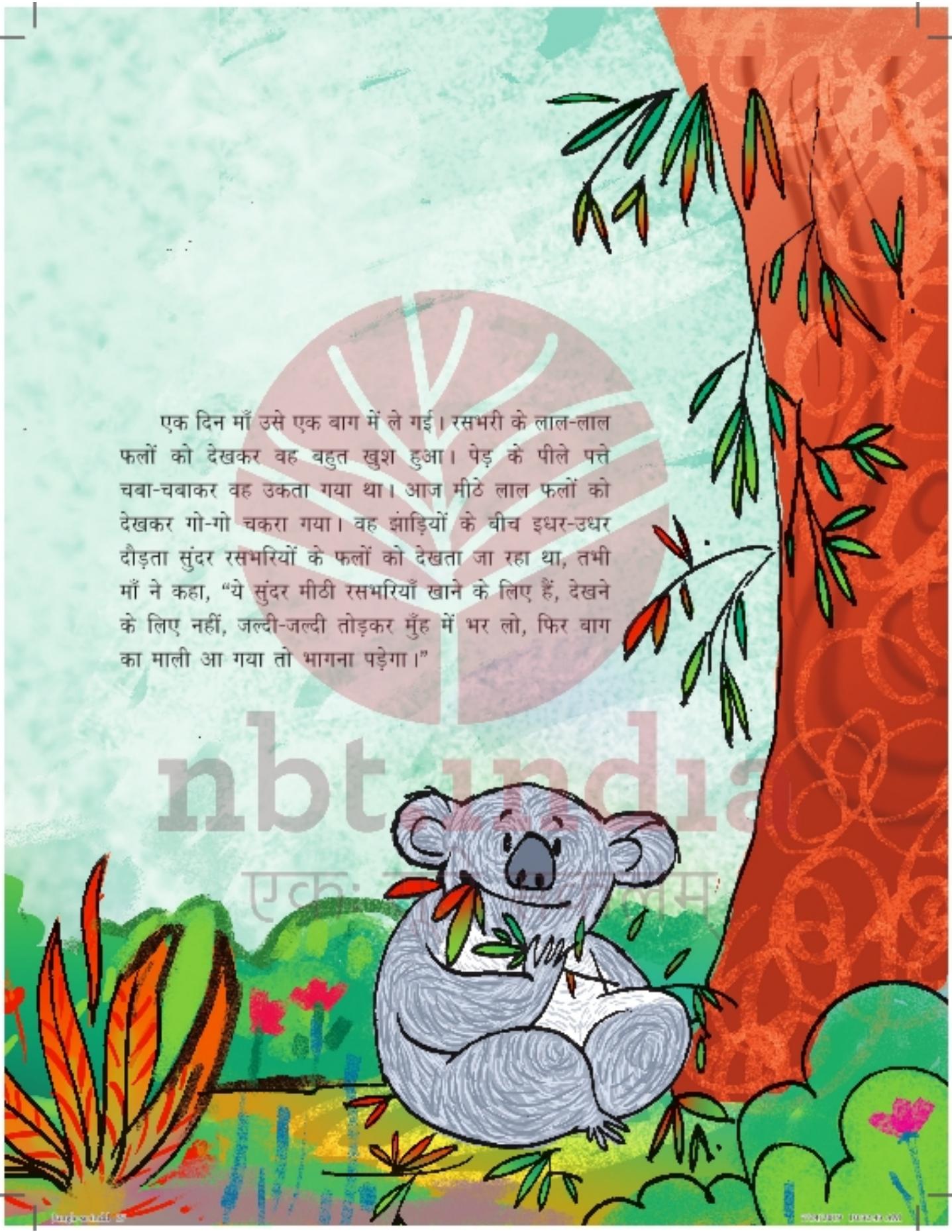
एक दिन माँ उसे एक बाग में ले गई। रसभरी के लाल-लाल फलों को देखकर वह बहुत खुश हुआ। पेड़ के पीले पत्ते चबा-चबाकर वह उकता गया था। आज मीठे लाल फलों को देखकर गो-गो चकरा गया। वह झाड़ियों के बीच इधर-उधर दौड़ता सुंदर रसभरियों के फलों को देखता जा रहा था, तभी माँ ने कहा, "ये सुंदर मीठी रसभरियाँ खाने के लिए हैं, देखने के लिए नहीं, जल्दी-जल्दी तोड़कर मुँह में भर लो, फिर बाग का माली आ गया तो भागना पड़ेगा।"

"हूँ", कहकर गो-गो ने रसभरियों का एक बड़ा-सा गुच्छा तोड़ लिया। इतने में माली के डंडे की ठक-ठक सुनाई दी। "गो-गो जल्दी से मेरी पीठ पर चढ़ जाओ, आओ!" गो-गो गुच्छा लिए माँ की पीठ पर चढ़ गया। माँ ने लंबी-लंबी छलाँगें भरीं और बाग से बाहर निकलने लगी। माँ की पीठ पर बैठे गो-गो के सिर पर बाग के कई पौधे टकराए। गो-गो सिर इधर-उधर घुमाकर उनसे बचता रहा। अचानक एक काँटेदार झाड़ी गो-गो के सिर पर अटक गई। गो-गो ने टहनी को हटाना चाहा, पर उसके हाथों में तो रसभरी का गुच्छा था। वह सिर पर अटकी काँटेदार टहनी को हटाता कैसे? हारकर उसे रसभरी के गुच्छे को छोड़ देना पड़ा। दोनों हाथों से काँटे हटाकर गो-गो ने माँ से कहा?, "भागो माँ"। दोनों दौड़कर किसी तरह बाड़ के पार हो गए। गो-गो ने बाड़ पर चढ़कर इधर-उधर देखा, खेत का मालिक जा चुका था। उसने नीचे झाँका, एक गिलहरी रसभरी का गुच्छा बड़ी मुश्किल से खींचती हुई एक ओर ले जा रही थी। गो-गो को एक उपाय सूझा। उसने बाड़ से एक लंबी काँटेदार टहनी खींच ली और हाथ में पकड़कर गिलहरी पर निशाना साधा। टहनी के काँटे गिलहरी को चुभे तो वह रसभरी का गुच्छा वहीं छोड़कर दुम दबाकर भागी। गो-गो झटपट बाड़ से उतरा। उसने रसभरी का गुच्छा मुँह में दबाया और चारों पैरों से चढ़कर बाड़ के पार हो गया।
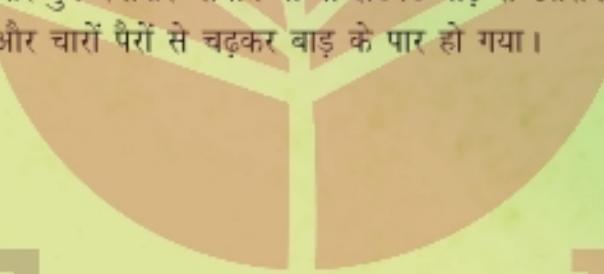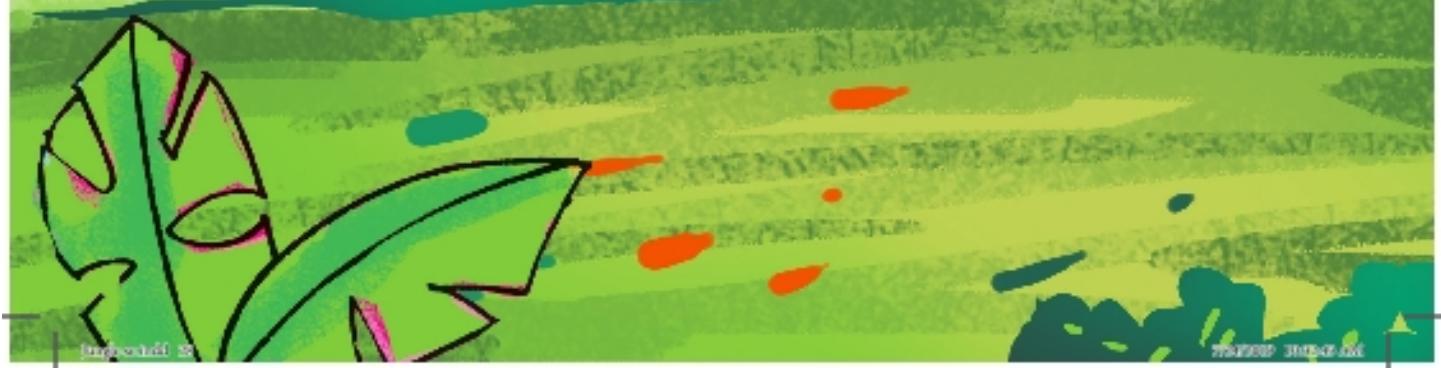
मामा और पापा खरगोश के बच्चों को बिल में छोड़कर जंगल की ओर जाने लगे तो मामा खरगोश बोली, “चिंटू-मिंटू हम दोनों जाकर कुछ खा-पी आते हैं। तुम्हारे लिए भी कुछ कोमल पत्तियों वाली टहनियाँ लेते आएँगे। खबरदार! तुम लोग इतनी देर बिल से बाहर मत निकलना, वरना कोई भी जंगली जानवर तुम्हें उठा ले जाएगा।”

“ठीक है, हम नहीं निकलेंगे”, चिंटू ने कहा।

“यदि कोई भेड़िया इधर आकर बिल खोदने लगे तो तुम क्या करोगे?”

“पिछले रास्ते से बाहर निकलकर झाड़ियों में छुप जाएँगे।”

“ठीक है! हम जल्दी लौटेंगे” पापा ने कहा।

“सावधान रहना” कहकर मामा और पापा खरगोश जंगल की ओर चल पड़े।

चिंटू और मिंटू कुछ देर बिल के अंदर बने कई रास्तों के बीच इधर-उधर दौड़ते खेलते रहे। थक गए तो बीच में बने गहरे गड्ढे में जाकर बैठ गए। सहसा उन दोनों के ऊपर मिट्टी गिरने लगी। उन्होंने कान लगाकर सुना, खर्र-खर्र की आवाज आ रही थी। कोई पंजों से बिल का मुँह खोद रहा था। “कौन हो सकता है,” चिंटू ने नथुने हवा में फुलाए।

“यह तो किसी जंगली जानवर की गंध है। लकड़बग्घा या लोमड़ी लगती है। यह तो पूरे जोर-शोर से बिल खोद रहा है। अब हम क्या करें?” मिंटू बोला। “अंदर से बिल के पास मिट्टी का ढेर लगाकर बिल का मुँह बंद कर देते हैं।” चिंटू ने कहा। फिर दोनों पंजों से अंदर भरी मिट्टी खींचकर बिल के मुँह पर लगाने लगे। अब बाहर की रोशनी अंदर नहीं आ रही थी। वे दोनों फिर पिछले रास्ते से बाहर

की तरफ भागे। पिछला रास्ता झाड़ियों के बीच में खुलता था। दोनों बाहर निकलकर झाड़ियों में छिप गए।

भेड़िया अब तक बिल का मुँह खोद चुका था। वह बिल के अंदर आगे बढ़ा। थोड़ी दूर चलकर उसने आगे का रास्ता बंद पाया। वहाँ एक मिट्टी का ढेर लगा था। वह फिर मिट्टी का ढेर हटाने लगा। इतने में मामा और पापा खरगोश आ गए। बिल का मुँह खुदा देखकर वे घबरा गए। उन्होंने अंदर झाँका। उन्हें एक भेड़िया मिट्टी खोदता दिखाई दिया। दोनों सरपट पिछले रास्ते की तरफ दौड़े। "हुँह-हुँह" मामा ने आवाज लगाई। "हुँह-हुँह", झाड़ियों के बीच से आवाज आई। दोनों बच्चों की आवाज पहचानकर वे झाड़ियों में घुस गए। दोनों बच्चों को वहाँ सही-सलामत देखकर वे बहुत खुश हुए।

"उफ! हम तो भेड़िये को बिल खोदते हुए देखकर डर गए थे," मामा ने कहा।

"पर हम नहीं डरे, हमने अंदर से कुछ दूरी पर मिट्टी का ढेर लगाकर बिल बंद किया और पिछले रास्ते से यहाँ आ गए। यहाँ आकर हमने पिछला रास्ता भी मिट्टी के ढेर से बंद कर दिया" चिंटू ने कहा।

"वाह! बच्चो, तुम तो वास्तव में समझदार हो," पापा ने दोनों को पुचकारा।

"पर अब हमें पुराने बिल में जाकर नहीं रहना चाहिए। उसे भेड़िये ने देख लिया है। अब वहाँ रहना खतरनाक है," मामा बोला।

"इसीलिए तो हमने झाड़ियों के अंदर भी काफी दूर तक मिट्टी खोदकर बिल बना लिया है," मिंटू बोला।

"छोटा है अभी, मामा देखो तो," चिंटू ने कहा।

"हाँ है तो छोटा, पर अब हम दोनों इसे खोदकर लंबा बना देंगे," कहकर चारों नया बिल बनाने लगे।

काफी गहरी सुरंग बनाकर वे चुपचाप नए बिल के पास बैठकर सुस्ताने लगे। इतने में उन्हें एक भेड़िया पास से गुजरता दिखाई दिया। वह मिट्टी झाड़ता हुआ बड़बड़ा रहा था, "उफ! बिल खोदते-खोदते परेशान हो गया, पर कुछ न मिला।" "शैतान जाने कहाँ छिप गए, शायद बिल छोड़कर कहीं और चले गए हों," बड़बड़ाता हुआ भेड़िया तेजी से जंगल की तरफ भागा। यह सुनकर चारों ताली बजा-बजाकर हँसने लगे। अब वे अपने नए बिल में खुश थे।

माँ बेटा

बरसात के दिन अभी-अभी बीते थे। नदी के उस पार खूब हरी घास उग आई थी। नदी के रेतीले तट की कटानों में कई दिनों से गधों का एक झुंड बरसात के थमने की प्रतीक्षा कर रहा था।

पानी थमा और नदी की धारा कुछ कम हो गई तो रेतीले दलदल में से गधों का झुंड चल पड़ा। इस झुंड में कुछ छोटे बच्चे भी थे। 'रोमू' इनमें सबसे छोटा था। माँ भी जब रेतीले दलदल में आगे चल पड़ी तो रोमू भी उसके पीछे-पीछे भाग खड़ा हुआ। रेत से पैर सन गए। फिर नदी के पानी को पार करते हुए पैर धुल भी गए, पर नदी पार करके ऊँची ढलान पर चढ़ते हुए रोमू का पैर चट्टान से टकरा गया और वह घायल हो गया। किसी तरह तीन टाँगों की मदद से उसने भी मुहाना पार किया और हरी-हरी घास में पहुँच गया। गधों का झुंड हरी घास को देखकर उस पर टूट पड़ा और जल्दी ही चरता हुआ आगे बढ़ गया।

रोमू की माँ 'बादामी' भी घास चरने लगी। पर रोमू पहाड़ी पर चढ़कर चित्त पड़ गया। उससे उठा नहीं जा रहा था। माँ बहुत देर तक उसके आस-पास की घास चरती रही। वह रोमू को छोड़कर झुंड के साथ आगे नहीं जा सकी। उसने बार-बार थूँथन से रोमू को सहलाया। उसके घायल पैर को खूब चाटा, पर रोमू उठ नहीं पाया। माँ ने देखा, उसके साथी बहुत आगे निकल चुके हैं। माना कि यह बस्ती के पास का इलाका है। यहाँ बड़े बाघ, शेर या गीदड़ नहीं रहते। पर बस्ती के आवारा कुत्ते भी आ गए तो वे नन्हे रोमू को नोच-नोचकर अधमरा कर देंगे। माँ को बहुत फिक्र हुई।
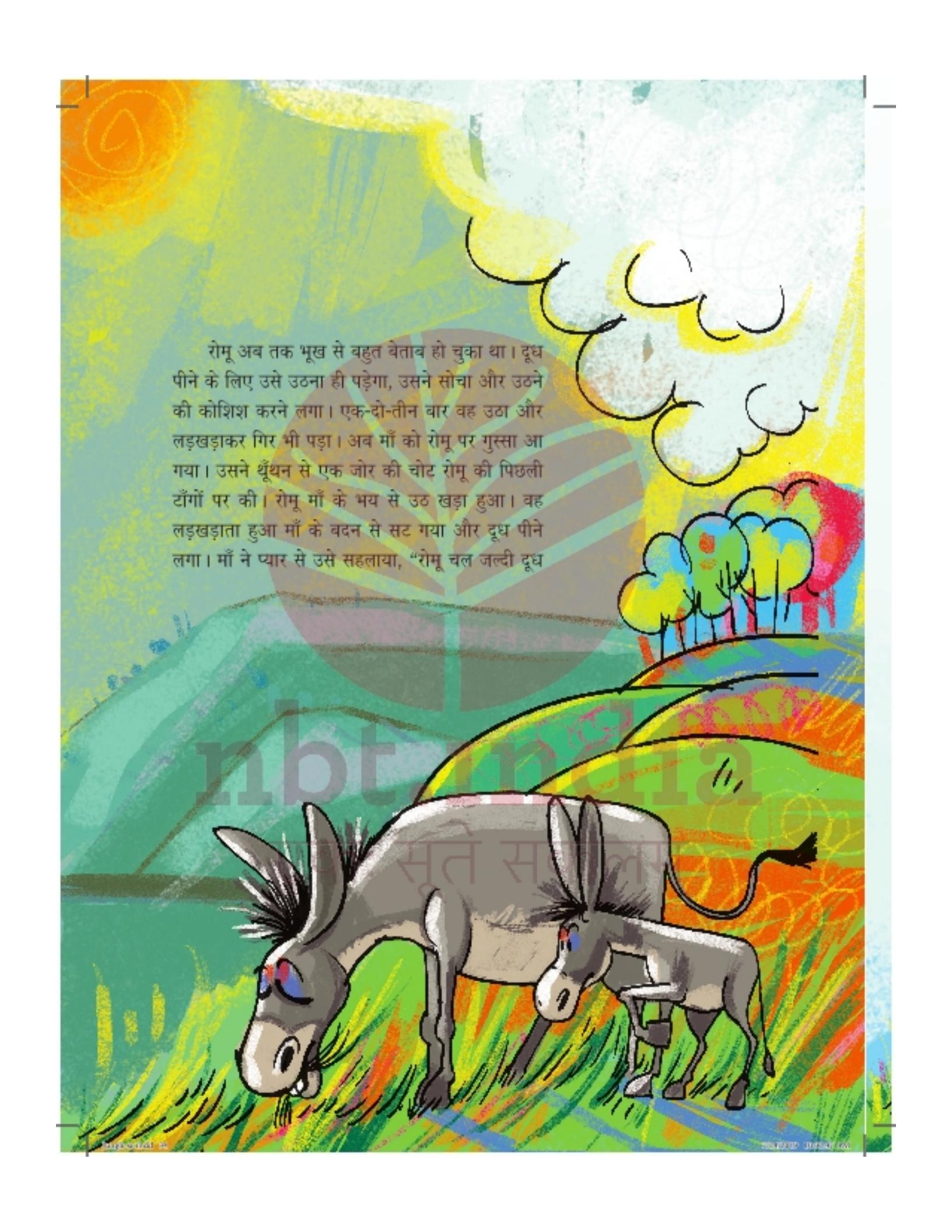
रोमू अब तक भूख से बहुत बेताब हो चुका था। दूध पीने के लिए उसे उठना ही पड़ेगा, उसने सोचा और उठने की कोशिश करने लगा। एक-दो-तीन बार वह उठा और लड़खड़ाकर गिर भी पड़ा। अब माँ को रोमू पर गुस्सा आ गया। उसने थूँथन से एक जोर की चोट रोमू की पिछली टाँगों पर की। रोमू माँ के भय से उठ खड़ा हुआ। वह लड़खड़ाता हुआ माँ के बदन से सट गया और दूध पीने लगा। माँ ने प्यार से उसे सहलाया, "रोमू चल जल्दी दूध

पी, आगे चलना है।" रोमू ने दूध पीकर फुर्ती महसूस की और वह माँ के साथ-साथ चोट खाई टाँग से लड़खड़ाता चलने लगा। इतने में कुत्तों की भौंकने की आवाज आई। "रोमू चल," रोमू तीन टाँगों पर दौड़ने लगा। माँ ने देखा दो कुत्ते पास आ पहुँचे हैं। वे रोमू को लँगड़ाता देखकर उस पर झपटे। माँ उन पर झपटकर उन्हें हटाती तथा रोमू को साथ-साथ लिए आगे बढ़ती रही। कुत्तों ने कई बार रोमू की पिछली टाँगों पर हमला भी किया। माँ हर बार उसे बचाती गई। अब एक कुत्ता माँ की टाँगों की ओर लपका। माँ यह मौका चूकने वाली न थी। उसने जोर से एक दुलत्ती झाड़ी तो कुत्ता चारों खाने चित्त दूर जा गिरा। अब तो रोमू ने भी माँ की नकल शुरू कर दी। रोमू के पिछले पैर से कुत्ते के नोचने से खून बह रहा था। एक कुत्ता उसके पैर को पकड़कर खींचने के लिए उसके पीछे लपका। रोमू ने भी पिछली दोनों टाँगों से दुलत्ती झाड़ी। कुत्ता दुलत्ती खाकर भाग खड़ा हुआ। वह समझ गया कि चोट खाकर भी रोमू इतना कमजोर नहीं हुआ कि उसे खींचकर नोचा जा सके। माँ ने रोमू की ओर हैरान होकर देखा और खुश होकर हवा में एक दुलत्ती झाड़ी। फिर वह दौड़ने लगी। रोमू अब घाव की परवाह किए बिना माँ के साथ दौड़ चला। जल्दी ही दोनों झुंड के साथ पहुँच गए। अब वे तेजी से घास चरने लगे, जबकि उनके साथी बैठे हुए जुगाली करने या ऊँघने लगे थे।

भय से मुक्ति

बीमा कंगारू ने अपने बच्चे को पेट की थैली में रखा और उछल-उछलकर जंगल की ओर चल पड़ी। जंगल में वह एक मीठे पत्तों वाले पेड़ के नीचे रुककर बोली, “बाहर निकलो ननकू! चलो, मेरी तरह मीठे पत्ते खाओ।”

“मैं बाहर नहीं निकलूँगा, मुझे डर लगता है,” पेट की थैली में से ज़रा-सी गर्दन लंबी करके ननकू बोला।

“यहाँ कोई नहीं है, ननकू बाहर निकल आओ।”

“नहीं, माँ मुझे डर लगता है, मुझे तो बस एक कोमल पत्तों वाली शाखा पकड़ा दो,” ननकू ने कहा।

माँ ने हारकर एक पतली टहनी ननकू की ओर बढ़ा दी। ननकू ने झट नन्हे-नन्हे हाथों से उसे थाम लिया और पत्ते चबाने लगा। बीमा ने भी एक लंबी टहनी पकड़ ली और पत्ते खाने लगी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद बीमा कहती, “ननकू! तुम्हारी टहनी मेरे पेट में चुभ रही है, हटाओ इसे।” ननकू हँसता और जानबूझकर टहनी की नोक माँ के पेट में चुभो देता। माँ चिढ़ गई बोली, “निकलो बाहर, मुझे ऊँची टहनी के पत्ते खाने हैं।”

“नहीं? मुझे डर लगता है।”

“ननकू, तुम्हें डर क्यों लगता है?”

“देखो तो उधर तुम्हारे जैसे बच्चे खूब भाग-दौड़ रहे हैं।”

माँ ने कुछ दूर खेलते हुए बच्चों की ओर इशारा किया। “नहीं माँ! मैं बाहर निकलूँगा तो मुझे भी चटकू की तरह चीता खा जाएगा।”

“चटकू की तरह! कौन चटकू? चटकू तो हमारे झुंड में किसी बच्चे का नाम नहीं।”

"तुम्हें याद नहीं होगा, उस दिन जब तुम मुझे पत्तों के ढेर में छोड़कर चली गई थीं, बदलू मेरे पास आया था।"

"तो!"

"तो क्या, उसने कहा कि पत्तों के ढेर में छिपे रहना, बाहर निकलोगे तो चटकू की तरह चीता तुम्हें चट कर जाएगा।"

"ऐसा अभी तक कभी नहीं हुआ, लारा ने बदलू को छिपे रहने के लिए यह बात कही होगी ताकि वह इधर-उधर न भाग जाए।"

"फिर भी मैं तो बाहर नहीं निकलूँगा।"

"उधर देखो ननकू, माँओं के पास खेलते हुए बच्चों ने यदि तुम्हारी बात सुन ली तो वे बहुत हँसेंगे, कहेंगे कि ननकू बहुत डरपोक है।"

"नहीं-नहीं कुछ भी कहो, मैं बाहर नहीं निकलूँगा।" यह सुनकर बीमा को बहुत गुस्सा आया। वह अपनी पिछली टाँगों पर उछल-उछलकर झट से झुँड के बीच में जा पहुँची। फिर

उसने जोर से ननकू को बाहर खींचा। ननकू नहीं-नहीं करता रहा। माँ नहीं मानी, ननकू ने भय से अपनी आँखें बंद कर लीं। वह जमीन पर गिर पड़ा। ननकू के बाहर निकलते ही बहुत-से कंगारू बच्चे दौड़कर पास आ गए।

"वाह! ननकू खेलने आया," बच्चे बोले। चैती और नोनू ने तो ननकू को हाथ पकड़ कर गोल घेरे के बीच खड़ा कर दिया। फिर सब बच्चे गाने लगे–

ननकू आया, ननकू आया
खेल-खेलता सबको भाया!
आओ! हाथ पकड़कर खेलें
गोला-गोल बनाकर खेलें!

ननकू ने अब आँखें खोल दीं। वह भी गोल घेरे का खेल खेलने लगा। अब उसका डर एकदम भाग गया था। माँ ने उसे खेलते देखा तो चैन से झाड़ी की घास कुतरने लगी।